# पढाई के क्षेत्र में युगद्रष्टा : डॉ. अब्दुल हक साहब की जीवनी

**श्री शेक सलीम बाषा**

**हिन्दी प्राध्यापक, उस्मानिया कालेज, कर्नूल (आ.प्र.)**

**प्रस्तावना :**

संसार में महान लोगों का जन्म किसी एक मक्सद की सफलता को लेकर होता है। ऐसे लोग मानव सेवा के बारे में सोचते रहते है। हमारे देश के इतिहास में कई ऐसे महान आदमी, महापुरूष हैं जिन्होंने हमारे देश की अन्नती के लिए अपना सारा जीवन बिता डाला। इस पवित्र भारत में कई लोग अपना सर्वस्व देश के लिए समार्पित करके लोगों की सेवा किये हैं। वे एक महान आदर्श की पूर्ति के लिए जन्म लेते हैं। इन्ही महापुरूषों में से एक हैं हमारे डॉ. अब्दुल हक साहब। इन्होंने अपने सर्वस्व को देश के हित के लिए मुख्यता रायलसीमा में फैली हुयी ज्ञानांधकार को दूर करके लोगों में ज्ञान की ज्योती जलाने में अपार कृषि किये हैं।

डॉ. अब्दुल हक साहब का जन्म सन 1901,21 फरवरी को कर्नूल शहर में हुआ। उनके पिता राम्शुल उल्मा मौलवी मोहम्मद उमर ने अब्दुल हक साहब को उर्दू, फारसी और अरबी सिखाई। उनके चरित्र निर्माण में उनकी माता का अमूल्य योगदान रहा। उन्होंने अपनी पढाई कर्नूल के मुन्सिपल हई स्कूल में की। बचपन में उनकी मुलाकात पेन्संड नवाब आफ कर्नूल, नवाब दाऊद खाँ से हुई और उनसे वह प्रेरणा पाये। ये बचपन से ही बडे होनकर दिखाई देते थे। उनकी प्रतिभा बचपन में दिखाई देनेलगी और जिंदगी भर विकसित होती रही।

1918 में उनकी माता हजीरा का देहान्त हुआ। इसी साल आपने मेट्रिक्युलेशन उत्तीर्ण हुये। वे उच्च शिक्षा के लिए मद्रास गये।मद्रास के प्रेसिडेन्सी कालेज में प्रवेश के लिए जाते हैं तो 1918 में इनका तिरस्कार किया गया। कालेज के प्रिन्सिपाल कहने लगे कि तुम यहाँ से जाओ। यहाँ बडे-बडे अमीर लोग, राजा-महाराज के बच्चे पढते हैं, तुम जैसे भिखारी लोग यहाँ नही पढ सकते, कहकर उनका अपमान किया गया। इसके बाद आप मौलाना अब्दुल सुबहान साहब के सहायता से गवर्नमेंट मोहम्मद कालेज, मद्रास में प्रवेश किये। अब्दुल सुबहान साहब ने हक साहब को भय के पिंजडे से निकाला और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया और उनको आपने घर में आश्रय देकर उनके जीवन को उभारा। हक साहब 1920 मे इन्टरमीडियट और 1922 में बि.ए.डिस्टिंगशन में उत्तीर्ण हुये।

1924 में आचार्य नैमुर रहमान के निर्देन में उन्होंने एम.ए. अरबिक में उत्तीर्ण हिुये। इसी साल वे मोहम्मद कालेज के अरबिक विभाग में आचार्य बने। क्योंकि रहमान साहब अपनी नौकरी छोडकरी इलहाबाद विश्वविद्यालय को चले गये थे। कुछ साल बाद आप ''उर्दू साहित्य अकाडमी'' को मोहमदन कालेज में स्थापित किया जो उर्दू मासिक पत्रिका ''सफीना'' की शूरूवात किये। इसमें ''हमराज'' नाम से आप प्रपत्र लिखते रहे। समाज की सेवा करने की भावना इनको यहाँ से ही शुरू हूई। वह समय की बरबादी नहीं करते थे। समय के महत्व को जानकर चलते थे। तुलसीदास का दोहा आपके जीवन में बराबर लागू होता है

**काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।**
**पल मै परिलय होयेगा, बहुरि करेंगे कब।**

1932 में उनकी मुलाकात डॉ. इकबाल से हुई जो प्रमुख आलोचक थे। इकबान नक ''इस्लाम धर्म पुनःनिर्माण'' के बारे में मद्रास आकर भाषण दिये। इस भायण से हकजी बहुत प्रभावित हुए और की सेवा सदैव करते रहे।

**विदेशी यात्राः**

हकजी पूरे एशिया और कई देशों की यात्रा कर चुके हैं। आप 1936 में आक्सवोर्ड विश्वविद्यालय, लंदन जाकर आचार्य डी.यस.मागोलीत के निर्देशन में ''दिवााने इबने **सनाउल मुल्क''** नामक विषय पर शोधकार्य करके डि.फिल अपाधि को प्राप्त किये हैं।

इटली देश के बारे में ''**इटालिया**'' नामक पुस्तक लिखे और इसे 1957 में मद्रास सरकार ने एस. एस.सी कक्षा के लिए एक पाठ्य विषय के रूप में रखे थे। ईजिप्ट के ''अल–अजर विश्वविद्यालय'' के उल्मा ने हक साहब को ''**अफजलुल-उलमा**'' के उपाधि से सम्मानित किये थे। यह विषय कैरो के प्रमुख अरबिक दैनिक पत्रिका ''**अल-बलाग**'' के पहले पन्ने पर छापा गया और हक साहब के चित्र को और उनके जीवन चरित्र के बारे में भी प्रकाशित किया गया। कैरो में उनकी मुलाकात के प्रमुख संवाददाता अल्लामा शेक जौहरी तनताावि से हुयी। उन्होंने हक साहब की प्रसंशा किये थे। इसी तरह टर्की में भी इनका स्वागत किया गया था। वहाँ एक महीना रहकर बडे–बडे साहित्यकारों के साथ मुलाकात किये हैं। इस तरह कई देशों की यात्रा करके 1936 में भारत लौटे।

1936 मे आप सरकारी मोहम्मद कालेज के अरबिक आचार्य के रूप में नियुक्त होते हैं। 1940 से 1948 तक आप इस कालेज के प्राधानाचार्य थे और इस कालाज की ख्याती को देशभर में फौलाये हैं। 1948 अक्तूबर में आप प्रेसिडेन्सी कालेज के प्रधानाचार्य के रूप में नियुक्त हुए। इसी कालेज में उनको 1918 में इनका दाखिला को इन्कार किया गया था। यहाँ आप 1948 से 1952 तक प्रधानायार्य के रूप में कई छात्रों के जीवन को सुधारे थे। इनके मेहनत और कृषि के कारण एक नया विषय "Islamic History and Culture" लागू किया गया। इन्होंने SSLC के लिए प्रवेश परीक्षा लागू किये, जो विद्यार्थी SSLC में असफल होते हैं, वे प्रइवेट से परीक्षा में भाग लेकर उत्तीर्ण होने पर कालेज में दखिला पा सकते थे।

1950 में आप हज की यात्रा किये थे। 1952 मै आप ''**अलीगर विश्वविद्यालय''** के ''**उपकुलपति''** के रूप में नियुक्त किये गये। 1955 में आप ''**मद्रास लोकसेवा आयेगा**'' (Madras Public Service Commission) के सदस्य बने। आपके आखरी साँस तक आप इसके अध्यक्ष बनकर रहे। आप अरबिक के Board of Studies के अध्यक्ष के रूप में काम किये थे।

**उस्मानिया कालेज की स्थापनाः**

उस समय रायलसीमा में विद्याविकास नाम मात्र थी। कलाशाला की शिक्षा के लिए यहाँ के छात्रो को दूर-दूर प्राँत जाना पडता था। प्रेसिडेन्सी कालेज में भर्ती होना कितना दुर्लभ है, हकजी स्वयं भोग चुके थे। वह सोचने लगे की ''यदि कर्नूल में कोई कलाशाला होगी, तो कई विद्यार्थियों की यह समस्या सदा के लिए दूर हो जायेगी और विद्या विकास होगा'' कार्यशूर हरकाम में सफलता पाते हैं। उन्होंने कई जगह से निधियाँ बटोर कर कालेज की स्थापना किये। उनके मेहनत के फल स्वरूप ही सन 1947 जन में ''**उस्मानिया कालेज**'' की शुरूआत हुई। एक कलाशाला की स्थापना के लिए और उन्नत आश्य लेकर उनसे प्रदर्शित की गयी उनकी शक्ती और युक्ति प्रशंसनीय है। कलाशाला के निर्माण के लिए उन्होंने अविरल मेहनत करते हुए अपनी योगदान दिये हैं।

उस्मानिया कालेज नामक पौधा आज बड़ा होकर एक सुविसाल वटवृक्ष बन गया हैं। इसके शाखायें चारों ओर फैल चुके हैं, इस कालेज मे पढ़कर कई देश के कोन-कोने में तरक्की हासिल कर रहें है। उन दिनों में हक साहब देश–विदेशों में घूमकर कालेज के लिए निधियों को बटोरते थे और कालेज की उन्नती किये। यहाँ रहीम का दोहा हकजी के लिए उपयुक्त होता हैं।

**तरूवर फल नहीं खात है, सरूवर पियहि नहीं पान।**
**कहि रहीम परकाज हित, संपति संचइ सुजान ।।**

अर्थात पेड अपना फल नहीं खाता, तालाब में बहनेवाले पानी को तालाब नहीं पीता। उसीप्रकार सज्जन लोग संपत्ति जुटाते है, तो वह अपने सुख के लिए नहीं किंतु दूसरे के हित के लिए ही खर्च करते हैं।

## देहाँत

सन् 1958 मार्च 15, शनिवार के दिन हमारे प्यारे डॉ. अब्दुल हक साहब की मृत्यु हुई। एक महान व्यक्ति को यह समाज और देश खो बैठा। हकजी आज हमारे बीच नहीं हैं, मगर न केवल रायलसीमा के मगर न केवल रायलसीमा के मगर सारे देशवासियों के हृदयों में सदा बसे हुये हैं।

हकसाब न केवल उस्मानिया कालेज की स्थापना ही करे हैं, बल्कि इनके योगदान के कारण ही फारूक कालेज मलबार के केरल में, जमाल मोहम्मद कालेज तिरूच्चि में न्यू कालेज मद्रास में और SIET (South India Educational Trust) मद्रास में जो लडकियों, के लिए स्थापना करके पढाई के क्षेत्र में द्रष्टा या युगपुरूष बनकर अमर बन गये हैं।

## उपसंहार

आज उनका मक्सद पूरा हो चुका है। उनसे बोयां हुआ यहा पौधा बडा वटवृक्ष बनकर कर्नूल का शान बनकर खडा हुआ है। आज इसके कई शाखाये हैं–हाजिरा डिग्री कालेज, हाजिरा जूनियर कालेज फर गल्स, उस्मानिया बी.इ.डी. कालेज, युनानी तिब्बी कालेज, आदि के रूप में फैला हुआ है। इनके जीवन से हम सबको यह शिक्षा मिलती है कि ''**जीवन में कष्ट आने पर भी उनकी सामना धैर्य और सहनशीलता से आगे बढना है और जिस उद्देश्य को लेकर आगे बढते हैं उसको पूरा करना चाहिए''**। जिससे समाज की देश की उन्नती होती है। आपकी जीवनर हमारे लिए एक उदाहरण है और हमें उनके बताये हुए रास्ते पर चलना चाहिए।